Volume: 4 Issue: 3 Pages: 57-59

लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण और ग्रामीण स्थानीय स्वशासन में महिलाओं की विशेष भूमिका

[1] सुमित कुमार एंव [*2]डॉ. राजीव कुमार

[1] (शोधार्थी), (मगध विश्वविद्यालय बोधगया बिहार, राजनीतिक विज्ञान, बिहार, भारत।

[*2] (अस्सिस्टेंट प्रोफेसर), राजनीतिक विज्ञान, के.एल. एस. कॉलेज नवादा), बिहार, भारत।

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (SJIF): 6.876
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 25/Feb/2025
Accepted: 22/March/2025

***Corresponding Author**
डॉ. राजीव कुमार
अस्सिस्टेंट प्रोफेसर राजनीतिक विज्ञान,
के.एल. एस. कॉलेज नवादा), बिहार, भारत।

सारांश:
लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण सहभागी लोकतंत्र को बढ़ावा देने, प्रभावी सार्वजनिक सेवा वितरण सुनिश्चित करने और हाशिए पर पड़े समुदायों, विशेष रूप से महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए एक महत्वपूर्ण शासन तंत्र के रूप में उभरा है। यह शोधपत्र ग्रामीण स्थानीय स्वशासन में लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण के महत्व की खोज करता है, जिसमें जमीनी स्तर पर लोकतंत्र को मजबूत करने में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया गया है। केंद्रीय सरकारों से स्थानीय संस्थाओं को राजनीतिक, प्रशासनिक और वित्तीय अधिकार हस्तांतरित करके, विकेंद्रीकरण नागरिक जुड़ाव को बढ़ाता है, समुदाय संचालित विकास को सुगम बनाता है और शासन की जवाबदेही में सुधार करता है। हालाँकि, लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण की प्रभावशीलता महिलाओं की सक्रिय भागीदारी से काफी प्रभावित होती है, जो स्थानीय शासन में अद्वितीय दृष्टिकोण और प्राथमिकताएँ लाती हैं। अध्ययन विकेंद्रीकरण नीतियों के ऐतिहासिक विकास और ग्रामीण शासन संरचनाओं पर उनके प्रभाव की जाँच करता है। यह विभिन्न विधायी ढाँचों, जैसे सकारात्मक कार्रवाई नीतियों, लिंग कोटा और विकेंद्रीकृत नियोजन पहलों पर प्रकाश डालता है, जिन्होंने स्थानीय स्वशासन में महिलाओं की भागीदारी को सुगम बनाया है। विभिन्न क्षेत्रों के केस स्टडीज़ का विश्लेषण करके, शोधपत्र ग्रामीण स्थानीय सरकारी संस्थानों में महिलाओं द्वारा सामना की जाने वाली प्रमुख सफलता की कहानियों और चुनौतियों की पहचान करता है। निष्कर्ष बताते हैं कि जब महिलाएं विकेंद्रीकृत संस्थानों में नेतृत्व की स्थिति में होती हैं, तो सार्वजनिक सेवा वितरण में उल्लेखनीय सुधार होता है, खासकर शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, जल स्वच्छता और सामाजिक कल्याण जैसे क्षेत्रों में। महिला नेता लैंगिक समानता, सामाजिक न्याय और सामुदायिक कल्याण से संबंधित मुद्दों को भी प्राथमिकता देती हैं। इन लाभों के बावजूद, ग्रामीण स्थानीय स्वशासन में महिलाओं को कई सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक और संस्थागत बाधाओं का सामना करना पड़ता है। लैंगिक पूर्वाग्रह, पितृसत्तात्मक मानदंड, राजनीतिक अनुभव की कमी, सीमित वित्तीय संसाधन और अपर्याप्त क्षमता निर्माण कार्यक्रम उनकी प्रभावी भागीदारी और निर्णय लेने की शक्ति में बाधा डालते हैं। इसके अलावा, जबकि आरक्षण नीतियों जैसे कानूनी जनादेशों ने स्थानीय शासन में महिलाओं के संख्यात्मक प्रतिनिधित्व को बढ़ाया है, उनकी वास्तविक भागीदारी और प्रभाव अक्सर पुरुष-प्रधान राजनीतिक संरचनाओं द्वारा बाधित होते हैं।

मुख्य शब्द: लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण, विशेष भूमिका, ग्रामीण, महिला

प्रस्तावना:

लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण एक शासन प्रक्रिया है जिसमें निर्णय लेने की शक्ति केंद्रीय अधिकारियों से स्थानीय सरकारी संस्थाओं को हस्तांतरित की जाती है। यह जमीनी स्तर पर लोगों को सशक्त बनाकर और सहभागी शासन को बढ़ावा देकर लोकतंत्र को मजबूत करता है। लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण के सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक स्थानीय स्वशासन में महिलाओं को शामिल करना है, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में। महिलाओं की भागीदारी लिंग-संवेदनशील विकास, सामाजिक न्याय और समावेशी निर्णय लेने को सुनिश्चित करती है। पिछले कुछ दशकों में हुई प्रगति के बावजूद, ग्रामीण महिलाओं को नेतृत्व के पदों तक पहुँचने और शासन में अपने अधिकारों का पूरी तरह से उपयोग करने में कई चुनौतियों का

सामना करना पड़ रहा है। यह लेख लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण की अवधारणा, इसके ऐतिहासिक विकास, कानूनी ढांचे, केस स्टडी, महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों और ग्रामीण स्थानीय स्वशासन में उनकी विशेष भूमिका का पता लगाता है।

लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण का ऐतिहासिक विकास

विकेंद्रीकृत शासन की जड़ें प्राचीन सभ्यताओं में हैं, जहाँ स्थानीय समुदाय निर्णय लेने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। उदाहरण के लिए:

- **प्राचीन ग्रीस:** नगर-राज्यों (पोलिस) में विधानसभाओं में प्रत्यक्ष भागीदारी के माध्यम से स्थानीय शासन और निर्णय लेने की अनुमति थी।
- **मध्यकालीन यूरोप:** स्थानीय स्वशासन कस्बों और नगर पालिकाओं में देखा जाता था जहां निर्वाचित प्रतिनिधि सामुदायिक मामलों का प्रबंधन करते थे।
- **पूर्व-औपनिवेशिक अफ्रीका:** जनजातीय परिषदें और बुजुर्ग आम सहमति के आधार पर निर्णय लेते थे, जिससे जातीय समूहों के भीतर विकेन्द्रीकृत शासन संभव हो पाता था।
- **भारत के ग्राम गणराज्य:** स्थानीय पंचायतें पारंपरिक लोकतांत्रिक सिद्धांतों के माध्यम से शासन करने वाली आत्मनिर्भर इकाइयों के रूप में कार्य करती थीं।

आधुनिक लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण ने 20वीं सदी के दौरान प्रमुखता हासिल की, खासकर स्थानीय शासन और भागीदारी लोकतंत्र को बढ़ावा देने वाले नए संविधानों के उद्भव के साथ। एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के देशों ने लोकतंत्र को मजबूत करने, सेवा वितरण में सुधार करने और समानता सुनिश्चित करने के लिए विकेंद्रीकृत शासन संरचनाओं को अपनाया।

लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण को समझना

लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण स्थानीय सरकारों को ऐसे निर्णय लेने और नीतियों को लागू करने की अनुमति देता है जो सीधे उनके समुदायों को प्रभावित करते हैं। इसमें शामिल हैं:

- **राजनीतिक विकेंद्रीकरण:** स्थानीय निर्वाचित प्रतिनिधि शासन का प्रभार लेते हैं, नीतिगत निर्णय लेते हैं जो सीधे उनके निर्वाचन क्षेत्रों को प्रभावित करते हैं।
- **प्रशासनिक विकेंद्रीकरण:** स्थानीय निकाय संसाधनों का प्रबंधन करते हैं, सेवा वितरण की देखरेख करते हैं, और अपने समुदायों की आवश्यकताओं के अनुरूप नीतियों को क्रियान्वित करते हैं।
- **राजकोषीय विकेंद्रीकरण:** स्थानीय सरकारों को वित्तीय संसाधन आवंटित किए जाते हैं, जिससे उन्हें बजट की योजना बनाने और विकास परियोजनाओं को स्वतंत्र रूप से क्रियान्वित करने की अनुमति मिलती है।

यह अवधारणा सब्सिडियरी के सिद्धांत के अनुरूप है, जहाँ शासन के कार्य दक्षता, समावेशिता और जवाबदेही को बढ़ाने के लिए सबसे निचले स्तर पर किए जाते हैं। लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण जमीनी स्तर पर लोकतंत्र को बढ़ावा देता है, निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में नागरिक भागीदारी को प्रोत्साहित करता है।

लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण का समर्थन करने वाला कानूनी और नीतिगत ढांचा

कई देशों ने लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण को संस्थागत बनाने के लिए कानून बनाए हैं। प्रमुख कानून इस प्रकार हैं:

- **भारत:** 73वां संविधान संशोधन अधिनियम, 1992: इस अधिनियम ने पंचायती राज संस्थाओं (पीआरआई) को संवैधानिक दर्जा प्रदान किया, विकेन्द्रीकृत शासन को सक्षम बनाया और महिलाओं के लिए एक तिहाई सीटें आरक्षित कीं।
- **दक्षिण अफ्रीका:** स्थानीय सरकार: नगरपालिका प्रणाली अधिनियम, 2000: नगरपालिकाओं के कार्यों और जिम्मेदारियों को परिभाषित करके लोकतांत्रिक भागीदारी और स्थानीय स्वशासन सुनिश्चित करता है।
- **फिलीपींस: स्थानीय सरकार संहिता 1991:** स्थानीय सरकार इकाइयों को सत्ता, राजस्व स्रोतों और जिम्मेदारियों को हस्तांतरित करके विकेंद्रीकरण के लिए एक रूपरेखा प्रदान करती है।
- **केन्या:** काउंटी सरकार अधिनियम, 2012: विकेंद्रीकरण को मजबूत करता है, स्थानीय प्राधिकारियों को सशक्त बनाता है, तथा सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से सेवा वितरण को बढ़ाता है।

प्रभावी लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण के मामले अध्ययन

1. भारत: पंचायती राज व्यवस्था

73वें संशोधन ने तीन स्तरों पर पीआरआई की स्थापना करके ग्रामीण शासन को बदल दिया: ग्राम पंचायत, ब्लॉक पंचायत और जिला पंचायत। महिला आरक्षण ने छवि राजावत जैसी महिला नेताओं को सशक्त बनाया है, जो एमबीए की डिग्री के साथ भारत की पहली महिला सरपंच हैं, जिन्होंने बुनियादी ढांचे के विकास, जल संरक्षण और डिजिटल साक्षरता के माध्यम से अपने गांव को बदल दिया।

2. ब्राज़ील: पोर्टो एलेग्रे में सहभागी बजट

यह मॉडल स्थानीय समुदायों को यह तय करने की अनुमति देता है कि सार्वजनिक धन कैसे खर्च किया जाए। इसने पारदर्शिता, जवाबदेही और नागरिक भागीदारी को बढ़ाया है, जो विकेंद्रीकृत शासन का एक वैश्विक उदाहरण है। सहभागी बजट के माध्यम से, नागरिक परियोजनाओं का प्रस्ताव करते हैं और उन पर मतदान करते हैं, जिससे संसाधनों का समान वितरण सुनिश्चित होता है।

3. युगांडा: स्थानीय सरकार अधिनियम, 1997

युगांडा ने स्थानीय जिलों को सशक्त बनाने के लिए विकेंद्रीकृत शासन मॉडल अपनाया, जिससे शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और स्वच्छता में सेवा वितरण में उल्लेखनीय सुधार हुआ। महिला नेताओं ने मातृ स्वास्थ्य देखभाल कार्यक्रमों और लड़कियों की शिक्षा की वकालत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

ग्रामीण स्थानीय स्वशासन में महिलाओं की विशेष भूमिका

महिलाएं विकेन्द्रीकृत शासन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, जहां वे निम्नलिखित माध्यमों से सामुदायिक विकास में योगदान देती हैं:

1. शासन और पारदर्शिता बढ़ाना

अध्ययनों से पता चलता है कि महिलाओं के नेतृत्व वाले स्थानीय निकाय कम भ्रष्ट हैं और शासन में अधिक पारदर्शी हैं। भारत के बिहार में, महिला सरपंचों वाले गांवों में पुरुषों के नेतृत्व वाले गांवों की तुलना में बेहतर स्वच्छता और स्वास्थ्य सेवाएं हैं। महिलाएं राजनीतिक संरक्षण की तुलना में सामुदायिक कल्याण को प्राथमिकता देती हैं, जिससे सार्वजनिक संसाधनों का कुशल उपयोग सुनिश्चित होता है।

2. सामाजिक मुद्दों पर नीति प्राथमिकता
महिला नेता शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, बाल कल्याण और लैंगिक न्याय जैसे सामाजिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करती हैं। नेपाल में, स्थानीय शासन में महिलाओं की भागीदारी ने घरेलू हिंसा, प्रजनन स्वास्थ्य सेवाओं और महिलाओं के लिए आर्थिक सशक्तीकरण कार्यक्रमों को संबोधित करने वाली नीतियों को जन्म दिया है।

3. आर्थिक विकास और स्वयं सहायता समूह
भारत के केरल में, महिलाओं के नेतृत्व वाली स्वयं सहायता समूह पहल कुदुम्बश्री ने ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त बनाया है। महिलाओं के नेतृत्व वाली स्थानीय संस्थाओं ने ऐसे मॉडलों का समर्थन किया है, जिससे महिलाओं के लिए वित्तीय स्वतंत्रता और उद्यमशीलता के अवसरों में वृद्धि हुई है।

4. राजनीतिक भागीदारी और नेतृत्व में वृद्धि
रवांडा की संसद में 60% से ज़्यादा महिलाएँ हैं और स्थानीय शासन में भी उनकी महत्वपूर्ण भागीदारी है। यहाँ शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और लैंगिक समानता के क्षेत्र में प्रगतिशील नीतियाँ लागू की गई हैं। रवांडा में महिला नेताओं ने मुफ़्त प्राथमिक शिक्षा और मातृत्व स्वास्थ्य सेवाओं जैसी प्रमुख नीतियों को प्रभावित किया है।

ग्रामीण स्थानीय स्वशासन में महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियाँ

महिलाओं की भागीदारी का समर्थन करने वाले कानूनी ढाँचे के बावजूद चुनौतियाँ बनी हुई हैं:

- **सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएं:** पितृसत्तात्मक मानदंड अक्सर महिलाओं के अधिकार को सीमित करते हैं, तथा उन्हें स्वतंत्र निर्णय लेने से रोकते हैं।
- **शिक्षा और प्रशिक्षण का अभाव:** कई महिलाओं में शासन, नीति-निर्माण और नेतृत्व संबंधी औपचारिक शिक्षा का अभाव है, जो निर्णय लेने वाली भूमिकाओं में उनके आत्मविश्वास और दक्षता को प्रभावित करता है।
- **सीमित वित्तीय संसाधन:** स्थानीय विकास पहलों के लिए वित्तीय सहायता प्राप्त करने में महिलाओं को चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, क्योंकि स्थानीय बजट अक्सर पुरुष-प्रधान राजनीतिक संरचनाओं द्वारा नियंत्रित होते हैं।
- **राजनीतिक प्रतिरोध और दिखावा:** महिलाओं को कभी-कभी पुरुष रिश्तेदारों द्वारा प्रॉक्सी के रूप में इस्तेमाल किया जाता है, जिससे उनकी वास्तविक निर्णय लेने की शक्ति कम हो जाती है और शासन में लैंगिक असमानता कायम रहती है।

समाधान और आगे का रास्ता

लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण में महिलाओं की भूमिका बढ़ाने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जाने चाहिए:

1. **क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण:** सरकारों और गैर सरकारी संगठनों को स्थानीय शासन में महिलाओं के लिए नेतृत्व प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना चाहिए, उन्हें नीति-निर्माण, बजट और शासन में कौशल से लैस करना चाहिए।
2. **वित्तीय सहायता तंत्र:** माइक्रोफाइनेंस संस्थाओं और सरकारी अनुदानों को सामुदायिक विकास परियोजनाओं के कार्यान्वयन में महिला नेताओं का समर्थन करना चाहिए।
3. **कानूनी सुधार और जागरूकता अभियान:** महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने वाले कानूनों को मजबूत करना, साथ ही शासन में लैंगिक समानता के बारे में समुदायों को शिक्षित करने के लिए जागरूकता अभियान चलाना।
4. **महिला नेटवर्क को प्रोत्साहित करना:** अनुभवों को साझा करने, महत्वाकांक्षी महिला नेताओं को सलाह देने और लिंग-संवेदनशील शासन के लिए एकजुटता बनाने के लिए महिला संघों की स्थापना करना।
5. **डिजिटल साक्षरता और ई-गवर्नेंस को बढ़ावा देना:** महिलाओं को प्रौद्योगिकी और ई-गवर्नेंस में प्रशिक्षण देने से प्रशासनिक भूमिकाओं में उनकी दक्षता बढ़ सकती है, सेवा वितरण में सुधार हो सकता है और स्थानीय शासन में पारदर्शिता बढ़ सकती है।

निष्कर्ष:

लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण निर्णय लेने की प्रक्रिया को लोगों के करीब लाकर शासन को मजबूत बनाता है। ग्रामीण स्थानीय स्वशासन में महिलाओं की भागीदारी समग्र विकास, लिंग-संवेदनशील नीतियों और सामुदायिक कल्याण को सुनिश्चित करती है। समावेशी शासन को अपनाकर, समाज जमीनी स्तर पर न्यायसंगत और सतत विकास को बढ़ावा दे सकता है, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि स्थानीय नीतियों और विकास एजेंडा को आकार देने में महिलाओं की सक्रिय और निर्णायक भूमिका हो।

संदर्भ सूची:

1. कुमार, एस. (2024, 31 जनवरी)। भारत में स्थानीय ग्रामीण सरकारों में निर्वाचित महिला प्रतिनिधि: प्रभाव और चुनौतियों का आकलन। orfonline.org. https://www.orfonline.org/research/elected-women-representatives-in-local-rural-governments-in-india-assessing-the-impact-and-challenges.
2. अहमद, एस. डब्ल्यू., निलोफर, और परवीन, जी. (2008)। उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी और नेतृत्व का बदलता पैटर्न। इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस, 69(3):661–672। http://www.jstor.org/stable/41856453
3. सिंह, जे.एल. (2005). महिलाएँ और पंचायती राज. सनराइज़ पब्लिकेशन्स
4. स्मिथ, एम. (1995). स्थानीय सरकार के लिए महिलाओं की बेहतर स्थिति। एजेंडा: लैंगिक समानता के लिए महिलाओं को सशक्त बनाना, 26, 30–32. https://doi.org/10.2307/4065917
5. महिलाओं पर संयुक्त राष्ट्र का चौथा विश्व सम्मेलन। (1995)। यूएन वूमेन। https://www.un.org/womenwatch/daw/beijing/platform/decision.htm
6. तिवारी, एम. (2010)। ग्रामीण बिहार की "दीदी": बदलाव की असली एजेंट? आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, 45(33), 27–30. http://www.jstor.org/stable/25741965
7. मंडल, ए. (2003). पंचायती राज संस्थाओं में महिलाएँ। कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स।
8. माणिक्यम्बा, पी. (1989)।
9. पंचायती राज संरचनाओं में महिलाएँ। जियान पब्लिशिंग हाउस।
10. मोहंती, बी. (1995)। पंचायती राज, 73वाँ संविधान संशोधन और महिलाएँ। आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, 30(52):3346–3350। http://www.jstor.org/stable/4403611
11. ओ'नील, टी., और डोमिंगो, पी. (2015)।
12. निर्णय लेने की शक्ति: महिलाएँ, निर्णय लेने और लैंगिक समानता। ओवरसीज डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट। http://www.jstor.org/stable/resrep51119